अध्ययन सामग्री →

विषय – हिन्दी

संकाय – कला

वर्ग – स्नातकोत्तर

सेमेस्टर – III

प्रश्न पत्र – नवम् (उपन्यास)

डॉ० सुमन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा
मोबाईल नं० – 7091260073

संदर्भ – 'त्यागपत्र' उपन्यास से संबंधित प्रश्नोत्तर । भाग – II

Scanned with CamScanner

किया है-प्रस्तुत हो गया अब समाप्त करें। जिंदगी कहानी है और बुआ की कहानी में अब सार नहीं बचा है। कुछ आलोचकों को इसीलिए 'त्यागपत्र' के संबंध में भ्रम होता है कि यह उपन्यास नहीं, बल्कि एक लम्बी कहानी है यह भ्रम गलत है। वस्तुतः 'त्यागपत्र' एक संक्षिप्त कथानक का ऐसा उपन्यास है, जिसका आकार-प्रकार भले ही छोटा हो किन्तु इसमें प्रमोद की बुआ मृणाल की संपूर्ण जिंदगी की कहानी है। किसी भी लंबी कहानी में एक संपूर्ण जीवन की कहानी नहीं समा सकती है संक्षिप्तता। तो इस उपन्यास की शक्ति है कमजोरी नहीं। बिहारी के दोहे की तरह गंभीर घाव करने वाले संदर्भ में मृणाल की टूटी हुई जिंदगी को समग्रता में प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास की शैली समास प्रधान है और इसका रस करुण है। एक एक परिवार में किशोरी मृणाल एक स्कूल बालिका की स्वच्छन्द मनोवृत्ति को लेकर प्रमोद अपना सबकुछ बताती है। मृणाल के बड़े भाई और भाभी ही उसके संरक्षण हैं और भतीजा प्रमोद जो उससे चार या पांच साल छोटा है, उसका अंतरंग साथी है। स्कूल में उसकी अंतरंग सहेली शीला है। भाभी के कठोर नियंत्रण में रहकर भी उसका प्रेम शीला के भाई से हो जाता है। वह अत्यन्त ही रूपवती है- कहानी की परियों का ध्यान हो आता है और मैं मुग्ध भाव से अपनी बुआ की ओर आकृष्ट हो रहता। बचपन से ही सहनशक्ति मृणाल में देखी जा सकती है। चाहे स्कूल में मास्टर द्वारा बेंत से मार खाने का प्रसंग हो या प्रमोद की माँ से। उसका विवाह एक अधेड़ आयु के पुरुष से हो जाती है वह ससुराल जाती है और लौटकर आती है और फिर शुरू हो जाता है उसके आत्मपीड़न का खेल। वह मृणाल प्रमोद की बुआ नहीं एक ऐसी दुनिया की मृणाल है जहां वह प्रसन्न नहीं है, पर वहां से बाहर निकलना भी संभव नहीं है। जैनेंद्र की नारी पात्र बदरंगों की वह साकार प्रतिमा है। जिसे पति और प्रेमी दोनों के बीच चुनाव करने की स्वतंत्रता उसे नहीं है। पति को

वह छोड़ नहीं सकती है और प्रेमी को वह पा नहीं सकती है एक ओर समाज है तो दूसरी ओर उसकी आंतरिक दुनिया भी है "प्रमोद सच्ची - सच्ची कहूं तो मैं ही पराई हो गई। तुम सब सगों के लिए पराई हूं तेरी माँ ने मुझे धक्का देकर पराया बना दिया है, पर जहां भेज दिया है प्रमोद मेरा मन वहाँ का नहीं है "लेकिन दूसरा उपाय भी नहीं है "विवाह की ग्रंथि दो के बीच की ही नहीं, बल्कि वह समाज के बीच की भी है चाहने से ही क्या वह टूटती है? विवाह भावुकता का प्रश्न नहीं, व्यवस्था का प्रश्न है "इस तरह पति के घर के अलावा स्त्री को क्या आसरा उसे उसने स्वीकार कर लिया। पर वह ईमानदार होकर रहना चाहती थी। उसने पति से पतिव्रता नारी की तरह अपने पूर्व प्रेम की बात बता दी। मृणाल की जीवन की त्रासदी कथा यहीं से प्रारंभ होती है वह पति परित्यक्ता हो जाती है। उसके रूप का लोभी कोयले का दुकानदार उसे शरण देता है फिर उसे छोड़ देता है। वह निजी तौर पर मास्टरनी बन जाती है वहाँ से भी उसे हटना पड़ता है और समाज के सबसे निकृष्ट लोगों के बीच रोगिणी बनकर अन्त में मर जाती है। यह छोटा कथानक त्याग पत्र का है। इसमें एक ऐसी नारी की व्यथा कथा और उसके जीवन के करुण संघर्ष जो सामाजिक स्तर पर त्याज्य है पर व्यक्तिगत स्तर पर सहानुभूति प्राप्त है। मृणाल उन तमाम भुक्तिवतियों का प्रतिनिधित्व करती है। जो पति और प्रेमी के थपेड़ों में यानी सामाजिक और वैयक्तिक मूल्यों के टकराहट में जी - जी कर मरती है और मर - मर कर जीती है। सीपी में मोती रहना मोती का अवगुण नहीं है वह तो आभूषण है। उसी तरह छोटे कथानक में मृणाल जैसे चरित्र की कल्पना और ... क कल्पना है। पात्रों में मृणाल की तरह ही प्रमोद का चरित्र भी भावपूर्ण है। अन्त: विश्लेषण की भाषा शैली में यह महागाथा प्रस्तुत करती है जिसमें महाकाव्य की गरिमा है। आत्मविलगाव का दर्शन मृणाल के चरित्र को बहुत गंभीर और प्रेरक बना देता है। इसीलिए आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने कहा है "यह जैनेन्द्र की उपन्यास कला की खूबी है कि मृणाल जैसी नारी से भी हम घृणा नहीं करते, बल्कि हम

सहानुभूति रखते हैं। "हिन्दी के दस श्रेष्ठ उपन्यासों में से 'त्यागपत्र' को गौरव सहित रखा जा सकता है। हम विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि 'त्यागपत्र' पूर्णतः सफल उपन्यास है।

Scanned with CamScanner